हरियाणा के शहर भारत के सबसे प्रदूषित शहरों में शामिल

चर्चा में क्यों?

सेंटर फॉर रिसर्च ऑन एनर्जी एंड क्लीन एयर (CREA) की एक रिपोर्ट के अनुसार, **जून 2024 में भारत के शीर्ष 10 सबसे प्रदूषित शहरों में से आधे से अधिक शहर हरियाणा के होंगे।**

मुख्य बिंदु

- अध्ययन में शामिल 251 भारतीय शहरों में **रोहतक सबसे प्रदूषित था।** जून में रोहतक में PM2.5 (सूक्ष्म श्वास कण) की औसत सांद्रता $116 \mu g/m^3$ थी, जो भारत में निर्धारित **सुरक्षित स्तर $60 \mu g/m^3$ से दोगुनी से भी अधिक थी।**
- जून में शीर्ष 10 सबसे प्रदूषित शहरों में रोहतक 28 बार शामिल रहा
- उसके बाद **चरखी दादरी एवं पंचकूला** 16-16 बार, बल्लभगढ़ 11 बार और **फरीदाबाद** 10 बार शामिल रहा।
- कुल 60 शहर दैनिक सबसे प्रदूषित शहरों की सूची में शामिल हुए। इनमें से 23 शहर कम-से-कम पाँच बार सूची में शामिल हुए। **केवल फरीदाबाद ही राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (NCAP) का हिस्सा है।**
- शिकागो विश्वविद्यालय की **2021 वायु गुणवत्ता जीवन सूचकांक (Air Quality Life Index- AQLI)** रिपोर्ट के अनुसार, **भारत दुनिया का दूसरा सबसे प्रदूषित देश है,** जहाँ सूक्ष्म कण वायु प्रदूषण (PM2.5) औसत नागरिक की जीवन प्रत्याशा को 5.3 वर्ष कम कर देता है।

कणिका पदार्थ

- इसे **कण प्रदूषण** भी कहा जाता है, **जो वायु में पाए जाने वाले ठोस कणों और तरल बूंदों के मिश्रण के लिये एक शब्द है।** इससे **श्वसन संबंधी समस्याएँ होती हैं तथा दृश्यता भी कम हो जाती है।**
- **इसमें शामिल है:**
    - **PM10:** साँस के साथ अंदर जाने वाले कण, जिनका व्यास आमतौर पर 10 माइक्रोमीटर और उससे छोटा होता है
    - **PM2.5:** साँस के साथ अंदर जाने वाले सूक्ष्म कण, जिनका व्यास आमतौर पर 2.5 माइक्रोमीटर और उससे छोटा होता है।
- **PM के स्रोत:**
    - इनमें से कुछ प्रत्यक्षतः जैसे- **निर्माण स्थल, कच्ची सड़कें, खेत, अथवा आग** किसी स्रोत से उत्सर्जित होते हैं।

राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम

- इसे **पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC)** द्वारा जनवरी 2019 में **लॉन्च** किया गया था।
- समयबद्ध कटौती लक्ष्य के साथ **वायु गुणवत्ता प्रबंधन के लिये एक राष्ट्रीय ढाँचा तैयार करने का यह देश में पहला प्रयास** है।
- इसका उद्देश्य मोटे कणों (10 माइक्रोमीटर या उससे कम व्यास वाले कणिका पदार्थ (PM) या PM10) **और बारीक कणों** (2.5 माइक्रोमीटर या उससे कम व्यास वाले कणिका पदार्थ, या PM2.5) **की सांद्रता को अगले पाँच वर्षों में** कम-से-कम 20% तक कम करना है, **जिसकी तुलना के लिये आधार वर्ष 2017** रखा गया है।
- इसमें **132 गैर-प्राप्ति शहरों को शामिल** किया गया है, जिनकी पहचान केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (Central Pollution Control Board- CPCB) द्वारा की गई थी।